ईश्वर की सृष्टिमें वर्ण अनिवार्य क्यों ?

शास्त्र धर्म प्रचार सभा
९१, चौरंगी रोड, कलकाता–२०
शाखाः १०९, अलोपीबाग, इलाहाबाद–६
दूरभाष : ८९०२४ ९५४४५
(89024 95445)

ईश्वर की सृष्टि में वर्ण अनिवार्य है, क्यों ?

सनातन धर्म के विरुद्ध मिथ्या प्रचार :

मारिया विर्थ जर्मन दार्शनिक अपने ब्लग में लिखती हैं – पश्चिम में आम लोगों को भारत के बारे में कुछ भी पता नहीं है। लेकिन एक बात जो वे सभी जानते है – भारत में अमानवीय जाति व्यवस्था है, जो उनके धर्म हिन्दुधर्म की एक महत्वपूर्ण विशेषता है। अधिकांश लोग जानते हैं कि ब्राह्मण उच्चतम जाति हैं, जो निचली जाति पर दमन करते हैं और सबसे अधिक अछूत प्रभावित हैं।

मैंने इसे प्राथमिक विद्यालय में पहले ही सीखा है, परन्तु उस समय मुझे उपनिवेशवाद के अत्याचारों के बारे में नाजी जर्मनी के कन्सेट्रेशन कैंप के बारे में कुछ भी पता नही था। १९६० के दशक के आरंभ में भारतीय जाति व्यवस्था, बवेरियन स्कूलों में पाठ्यक्रम का अंश था, और आज भी यह है – कुछ समय पहले मैंने ऋषिकेश में तीन युवा जर्मनों से पूछा कि वे हिन्दू धर्म के साथ किसे जोड़ते हैं ? उनका तत्पर उत्तर था, जातिवाद। निश्चित रूप से, उन्होंने यह भी सीखा था कि यह सबसे अमानवीय था। वस्तुत: दुनिया भर में स्कूल के बच्चों को अमानवीय जाति व्यवस्था के बारे में सिखाया जाता है, क्यों ?

सम्भवत: इसके पीछे एक एजेंडा (षड्यंत्र) है। हाँ, जाति व्यवस्था का अस्तित्व है, और अस्पृश्यता का भी विश्वभर में अस्पृश्यता व्याप्त है। दिलचस्प बात यह है, पुर्तगाली भाषा में श्रेणी व खण्ड को cash व जाति कहते हैं। यह एक भारतीय शब्द भी नहीं है। प्राचीन वेदों में चार वर्णों के उल्लेख हैं – ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र, जो समाज के शरीर का निर्माण करते हैं, जैसे सिर, भुजा, हाथ और पैरों से मनुष्य शरीर बनता है। यह एक सुंदर समरूप है जिसका तात्पर्य है कि सभी अंगों का महत्व है। यह सत्य है, मस्तक को अधिक सम्मान

दिया जाएगा, लेकिन क्या हम अपने पैरों का अनदेखा करेंगे ? वास्तव में, वैदिक कार्य के लिए हम सब को नहीं बनाया गया है क्योंकि किसान, व्यापारियों एवं श्रमिक के बिना समाज का निर्माण संभव नहीं होगा। सभी को अपनी अपनी भूमिका निभाना पड़ेगा, एवं भविष्य के जन्म में, इस भूमिका के उलट जाने की संभावना है।

सृष्टि के प्रारम्भ में वर्ण वंशानुगत नहीं था। यह किसी के प्रमुख गुण (चरित्र की गुणवत्ता) और उनकी वृत्ति पर निर्भर था। ब्राह्मणों का कार्य, विशेष रूपसे वेदों को स्मरण कर भविष्य की पीढ़ी के लिए उन्हें पूर्णतया उचित ढंग से संरक्षित रखना था। उनमें मुख्य रूप से सत्व (शुद्ध) गुण की प्रधानता होना आवश्यक था और किसी अन्य जाति की तुलना में शुद्धता के लिए अनेक नियमों का पालन करना विशेष रूप से प्रयोजन था।

ब्राह्मण वेदों की शुद्धता के अभिभावक थे। हम यह समझ सकते हैं कि इस कारण वे ऐसे लोगों को स्पर्श नहीं करेंगे। स्वरूप उदाहरण, जो मृत जानवरों को हटाते हों या जो सीवरों की सफाई करते हों, यद्यपि समाज में ऐसे लोगों का भी प्रयोजन है जो यह काम करते हैं। पश्चिम देशों में, लोग ऐसे व्यक्तियों से हाथ भी नहीं मिलायेंगे। लेकिन इससे वहाँ कोई समस्या उत्पन्न नहीं होती है।

ब्राह्मण सत्व गुण प्रधान होने से, समाज के अन्य समूहों के प्रति उनके द्वारा अपमानजनक बर्ताव करने की संभावना कम थी। साधारण तौर पर, जो स्वयं को किसी अन्य समूह से बड़े मानते हैं, वही दूसरों को हीनभाव से देखते हैं। यह विशेषता सभी समाजों में हैं। लेकिन यह सच है कि भारत में, दुर्भाग्य से, समय के साथ, चार वर्णो को जन्म से विरासत में मिला था। आज, कई ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र हैं, जो अब अपने धर्म का पालन नहीं करते है, उन्हें

अपने वंशगत कर्म से संबंधित नहीं माना जाना चाहिए।

जबकि, पश्चिम में उच्च कुल वाले जाति वहाँ के श्रमिकों के साथ नहीं मिलते हैं और उनके पड़ोस में रहना भी पसंद नहीं करते है? परन्तु भारत में समाज की संरचना पर लगातार निंदा होती हैं, यह क्यों? अंग्रजों ने ..... कर्नाटक के मडिकेरी शहर में व शायद पूरे देश में ... १. जब क्लब में प्रवेश करने की अनुमति...केवल श्वेतकाय (गौर वर्ण) अंग्रेजों को दिया... तब उनपर कोई आरोप क्यों नहीं लगाता। यह एक वृद्ध भारतीय सज्जन का कहना था? यदि मुझे सही याद है, तो उन्होंने कहा कि क्लब के विज्ञापन पर लिखा था, ''कुतों और भारतीयों को प्रवेश करने की अनुमति नहीं है''?

२. ब्रिटिश उपनिवेशवादियों की कृषि नीति से जब २.५ करोड़ भारतीयों को भूख के कारण मौत के घाट उतारा गया तब कोई क्यों परेशान नहीं हुआ? उस समय २.५ (ढाई) करोड़ पुरुष, महिलाएं और बच्चे धीरे-धीरे मर रहे थे क्योंकि उनके पास खाने के लिए कुछ भी नहीं था, अंग्रेजों के कब्जे से पहले जो सबसे अमीर देश था, ऐसे भारतीयों की भयानक तस्वीरें इंटरनेट पर हैं जिनके केवल त्वचा और हड्डियाँ दिखाई देते हैं और जो मुश्किल से जिंदा हैं।

३. जब भारत में गुलामी के समाप्त होने के बाद, अंग्रेजों ने भारतीय श्रमिकों को दुनिया भर के गन्ना उपजाने वाले एस्टेटों में ठसाठस भरकर भेजा, यात्रा के पूर्व ही बड़ी संख्या में उनकी मृत्यु हो गई थी - इससे कोई भी परेशान क्यों नही हुआ?

४. मुसलमानों ने हमलों में हिंदुओं और खासकर ब्राह्मणों के साथ क्या किया, इस विषय में कोई क्यों बात नही करता? वे कितने क्रूर थे? कितने हिन्दू मारे गये या दास बना लिए गये। कितने ही हिन्दू महिलाओं ने सामूहिक

आत्महत्या की ताकि वे मुस्लिम सैनिकों के हाथ में न आएँ?

५. वर्तमान समय, आई एस के कारण हम कल्पना कर सकते हैं कि उस समय क्या हुआ होगा, फिर भी वामपंथी और यहाँ तक कि प्रतिष्ठित ब्रिटिश सांसद इस भयंकर विषय से चिंतित नही हैं। लेकिन वे ''भारत की सबसे अमानवीय जाति व्यवस्था'' से बड़े चिंतित हैं। यह निश्चित रूप से स्पष्ट है कि औपनिवेशिक शासकों ने १८७१ से आगे की जनगणना में, वर्ण के आधार पर विभाजन किया, एवं जातियो के बीच एक विभेद डालने की कोशिश की दूसरी और वर्तमानकाल के लोकितांत्रिक विपक्ष उत्तराधिकारी, अपने ही देश में स्वार्थी प्रचार माध्यम (media) और संसदीय कानून के बलपर गलत भावना को आगे बढ़ाने का दुष्ट प्रयास चला रहे हैं।

६. मेरा तर्क यह है कि ब्राह्मणों ने यदि भी दूसरों को तिरस्कार किया, वो क्रिश्चियन उपनिवेशवादियों और मुस्लिम आक्रमणकारियों की तुलना में उपेक्षणीय था।

७. तो फिर जाति व्यवस्था के तथाकथित अत्याचार क्यों इतने प्रचारित हैं ? इसका कारण हो सकता है, जो वास्तव में दोषी है और जिन्हें अपने किये पर पश्चाताप होना चाहिये उनसे ध्यान हटाना। वास्तव में वे ब्राह्मण दोषी नहीं है। उनमें से कई आज भी आरक्षण के कारण पीड़ित है ओर गरीबों को कई मामलों में धार्मिक अल्पसंख्यकों या निम्न वर्ग को दिए गए लाभों से बाहर रखा जा रहा है।

८. लेकिन यही एकमात्र कारण नहीं है कि जाति व्यवस्था और ब्राह्मण को दुनिया भर में कोसा जा रहा है। एक और उनका उद्देश्य है, ब्राह्मणो को शर्मिंदा करना, ताकि वे अपने पूर्वजों के बारे में दोषी महसूस कर सकें और उन्हें वेदों का अध्ययन करने और उसकी शिक्षा देने के -अपने मूल धर्म का पालन करने से, अनिच्छुक बना सकें। लक्ष्य यह है कि भारत से वैदिक ज्ञान लुप्त हो आए, क्यों कि यह इसाई धर्म और इस्लाम के लिए खतरा बन गया है।

यह आसानी से उनके तथाकथित सत्यानुभव को चुनौती दे सकता है। वेदिक ज्ञान तर्कसिद्ध है और इसीलिए सारे विश्व में ईसाई और इस्लाम मत के विस्तार के लिए सबसे बड़ी वाधा हैं। दुर्भाग्यवश, बहुत सारे वैदिक ग्रंथ पहले ही खो चुके हैं। काचीपुरम् के पूर्व शंकराचार्य परम पावन श्री चंद्रशेखरेंद्र सरस्वती ने अपनी पुस्तक ''द वेदास'' में लिखा है कि वेदव्यास ने ५००० साल पहले ४ वेदों को ११८० शाखाओं में विभाजित किया जिसमें केवल आठ ही उपयोग में हैं। (क्या इंगलैंड, जर्मनी और अन्य देशों को खोजने से, इस खजानोंमें से कुछ उपलब्ध होंगे?) अब समय आ गया है कि ब्राह्माणों को कोसना रोका जाए और भारतीय जाति व्यवस्था को मानवता के साथ होने वाली सबसे बुरी स्थिति के रूप में दिखाना बंद हो। यह कितना नकली प्रतीत होता है, विशेषतः जब 'आई एस आई एस'' से जुड़े समाचार का उल्लेख करते हुए, जैसे कि— आई एस आई एल ने १९ याजीदी महिलाओं को लोहे के पिंजरों में डाल कर जला डाला, क्यों कि उन्होंने उनके सैनिकों के साथ यौन संबंध रखने से इंकार कर दिया था? ऐसी दुर्भाग्यपूर्ण भयंकर घटनाओं का बिना भावनात्मक या तीव्र निंदा किये, ही बताया जाता है।

कुछ समय पूर्व, मैंने दक्षिण भारत के एक मंदिर में एक बूढे ब्राह्मण दम्पति को देखा। उनमें गरिमा थी लेकिन वे काफी दुबले पतले थे। जब प्रसाद (पवित्र भोजन) वितरित किया जा रहा था, वे मेरे सामने कतार में खड़े थे। बाद में मैने उन्हें फिर से कतार में खड़े पाया संभवतः गरीबी के कारण।

ब्राह्मणों को अपने पूर्वजों के बारे में अपराधी मानने की आवश्यकता नहीं है। बल्कि उन्हें उन पर गर्व होना चाहिये क्योंकि उनके ही कारण भारत एकमात्र ऐसा देश है जिसने कम से कम आंशिक रूप से अपने बहुमूल्य, प्राचीन ज्ञान को संरक्षित किया है। वास्तव में दूसरों को दोषी होने का अनुभव होना चाहिए, लेकिन वे निर्लज्ज कभी नहीं मानेगें। वे हिंदु और ब्राह्मणके खिलाफ अन्यायपूर्ण घृणा से परिवेश को दूषित करते है। (ब्लागः मारिया विर्थ, १३ सितंबर, २०१७ ब्राह्मणों पर अत्याचार और भारत की जाति व्यवस्था की कार्यसूची)।

(i) मन्तव्यः ब्राह्मणों ने न केवल हिंदू समाज को विघटन से बचाा

बल्कि सनातन हिन्दू संस्कृति की अधर्मशीलता के सहज शिकार बनने से रक्षा की।

भारत में एक जाति और दूसरे के बीच विभेद कभी नहीं रहा है, भले ही एक ही जाति के शासकों के बीच व्यक्तिगत विभेद रहा हो।

(ii) स्वामी विवेकानन्द कहा था— कभी कभी हमें बच्चों का कम आयु में ही विवाह देना पड़ता है। क्यों ? क्योंकि जाति के अनुसार अगर उन्हें किसी भी तरह से उनकी सहमति के बिना शदी करनी है, तो श्रेय है कि उनकी शादी जल्द ही करा दी जाए। जैसे जैसे मेरी आयु बढ़ती हैं, मै उतनी ही भली भाँति इन चिरप्रचलित रीति रिवाजों के बारे में सोचती हूँ।

मुझे उनको कोसने मे उतनी ही झिझक होती है, क्योकि उनमें से प्रत्येक, सदियों के अनुभव का फल है। इस जाति से बनी रक्षाकवच के आस पास हरतरह के आक्रमण कभी सफल हूए व कभी विफल परन्तु इसे कभी भेद नहीं पाए।

जितने ऊँची जाति, उतने ही अधिक प्रतिबंध थे।

जिन स्थानों पर जाति की सुरक्षा का प्रभाव अनुपस्थित रहा वहाँ लोग इस्लामी धर्मान्तरण का सहज शिकार बन गए और उन्हें सामूहिक रूप से धर्मान्तरित कर दिया गया।

(iii) वेद शास्त्र प्रमाण :

तैत्तिरीय संहिता में है-

प्रजापतिरकामयत प्रजायेयेति, स मुखं निरमिभीत,
तमग्निर्देवता अन्वसृजत ब्राह्मणो मनुष्याणामजः पशूनाम् तस्मात्ते मुख्याः।
वाहुभ्यां पञ्चदशं निरमिमीत तमिन्द्रो देवता अन्वसृज्यत...
राजन्यो मनुष्याणमविः पशूनाम् तस्मात्ते वीर्यवन्तो...मध्यतः सप्तदशं निरमिमीत,
तं विश्वदेवा देवता अन्वसृज्यन्त..
वैश्यो मनुष्याणां गावः पशूनाम्...सोऽ.....न्येभ्यो भूयिष्ठा
हि देवता अन्वसृज्यन्त, शूद्रो मनुष्याणामश्वः पशूनाम्...।

सृष्टि करने की इच्छा से प्रजापति ने अपनी चैतन्यमय स्वरूप के मुख से तीन प्रकार की सृष्टि किया, वे जो ब्राह्मण वर्ण के हुये-देवताओं में अग्नि, मनुष्य में ब्राह्मण एवं पशुओं में छाग (व बकरी)। बाहों से जो पंद्रह प्रकार के उत्पन्न हुये वे क्षत्रिय वर्ण के हुए जैसे कि देवताओं में इन्द्र, मनुष्यो मे क्षत्रिय एवं पशुओं मे भेड़। प्रजापति के चैतन्यमय मध्य से १३ प्रकार के जो उत्पन्न हुए उनमें देवताओं में विश्वदेवगण, मनुष्यों में वैश्यजाति एवं पशुओं में गाय थे। चरणों से जो उत्पन्न हुए वे शूद्र वर्ण के रहे- देवताओं में अनेक सारे देवतागण मनुष्यों में शूद्रजाति एवं पशुओं में घोड़ा।

पूर्वोल्लिखित वेदमन्त्र से यह स्पष्ट है कि वर्ण विभाग केवल मनुष्य ही नहीं, बल्कि देवता व पशु में भी है।

जीव/वर्ण	ब्राह्मण	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र
उद्भिज वृक्ष, लता गुल्म अन्नमयकोष (१)	अश्वथ वट	शाल सैगन	आम कटहर	बाँस औषधि
स्वेदज कीट पतंग मच्छर /दंश (अन्न बह प्राणमय कोष) (२)	मधुप पुष्पज	रक्त से उत्पन्न	लाख कीट तथा	विष्ठाकृमि
अंडज पक्षी सरिसृप अन्नप्राण एवं मनोमय कोष (३)	कपोत (कबूतर)	बाज	मयूर	कौए शकुन
जरायुज पशु अन्नप्राण व मनोमय कोष ९४)	बकरा	मेष (भेड़)	गाय	अश्व
जरायुज मनुष्य अन्नप्राण मन विज्ञान व आनन्दमय कोष	ब्राह्मण	क्षक्षिय	वैश्य	शूद्र
देवता	अग्नि	इन्द्र	विश्व देवगण	अनेक देवगण
ग्रह	वृहस्पति शुक्र	रवि मङ्गल	बुध चन्द्र	शनि राहु केतु

जेनेटिक्स या अनुवंश विज्ञान जन्म से जाति निर्धारण को ही समर्थन देता है। जाति विभाग के उत्कर्ष को वैज्ञानिक विचार के माध्यम भी जानना सम्भव है। मिस्टर एल. जे. सेजविक १९२७ में कहते हैं कि -

मानव शरीर के रक्त की पवित्रता के सम्बन्ध में प्रजनन विज्ञान का यह मत है कि हिन्दुओं का अपनी जाति एवं दूसरे गोत्र में विवाह, श्रेष्ठ उपाय है। अपने जात में विवाह से जिस प्रकार वर्ण संकर के प्रभाव से समाज मुक्त रहता है, दूसरी ओर गोत्र में विवाह के फलस्वरूप एक ही जात के भीतर किसी नये उपजाति की सृष्टि भी नहीं होती। ब्रिटिश मेडिकल जर्नल में डा. ब्रस्टार ने नपुंसक के विषय में लिखे लेख के उपसंहार में लिखा है कि एड्रिनलिन ग्रंथि के विकार से ही नपुंसकता होता है। विभिन्न जातों (देशों) के बीच मिश्र विवाह से जिन सन्तानों का जन्म होता है उनमे नपुंसकता की संख्या के बढ़ते देख हम विस्मित हैं, अब हम, डाक्टरों को भी विभिन्न जातों के बीच रक्त के संमिश्रण के कारण, अनेक सारे रोगों के उद्भव का पता चल रहा है जैसे कि - हिमोलिटिक रोग (जो Rh+ धनात्मक एवं Rh– ऋणात्मक माता के कारण होता है)। पाश्चात्य देशों में जहाँ विवाह में कोई भी वाधा नहीं रहती, इन रोगों का प्रादुर्भाव विशेष रूप से देखा जा रहा है।

वहाँ मसजिद या धर्मोपदेश करने का आसन व स्थान निर्माण करो, वहाँ खुतबा पढ़ा जाना चाहिये और सिक्के पर इस सरकार का मोहर लगना चाहिये। तुमने सेना की सहायता से, अपने सौभाग्य एवं अवसर के सदुपयोग से ये जीत हासिल की है, अतः यह अवश्य ही जहाँ कहीं भी नास्तिकों (अर्थात् गैर मुसलमान हों) उनकी जगह पर जाओ, उनपर जीत हासिल करो। मुहम्मद कासिम ने सुलतान की जनता से सम्बन्ध स्थापित किया।

ये सारी अनमोल जानकारी सन्दर्भ सहित प्रख्यात मनीषी एवं सुप्रीम कोर्ट के वरिष्ठ वकील श्री विवेक गोयल द्वारा लिखित ग्रन्थ India The Greatest Economy on Earth--भारत विश्व का सर्वश्रेष्ठ अर्थव्यवस्था में सविस्तार उपलब्ध है और साभार उद्धृत हुये हैं।

८. भगवान की सृष्टि में वर्ण अनिवार्य

प्राचीन भारतीय परम्परा को माननेवाले शास्त्र के विद्वानों ने देखा है कि किस प्रकार वर्ण व्यवस्था पूरी सृष्टि में ओतप्रोत है। यह अवधारणा कि ब्राह्मणों ने जाति बनाया और सामाजिक नियम बनाये ताकि उनका अपना उद्देश्य पूरा हो सके यह विकृत भावना की उपज और कुटिल छल है।

इतिहास बताता है कि प्रसिद्ध राजा भोज राज एक लेखक भी थे और उन्होंने कई विषयों पर पुस्तकें भी लिखा था। उन्होंने योग, आयुर्वेद, ज्योतिष, व्याकरण धर्म शास्त्र जैसे विषयों के अलावा 'युक्ति कल्पतरु' नाम से ग्रन्थ की रचना की। यह ग्रन्थ आकार में छोटा है लेकिन विश्वकोष जैसा दिखता है और इसमें जहाज निर्माण की विधि बहुत विस्तार से दी गई है (११वीं शताब्दी)। इस अद्भुत ग्रन्थ की तुलना

केवल वृहत् संहिता से किया जा सकता है जो नवरत्न ने लिखा था (नवरत्न-९ अद्वितीय व्यक्ति) जो शक्तिशाली राजा विक्रमादित्य के सभा में थे। लेखक–– संभवतः भोज-प्रामर ने अनेकानेक 'युक्ति कल्पतरु' से उद्धरण दिया है। लेकिन श्लोकों का उद्धरण सीधे नकुल के पुस्तक से लिया गया है। नकुल जो युधिष्ठिर के भाई थे वे घोड़ों पर विशेषज्ञ थे।

(क) अश्व परीक्षा अध्याय में–

वाजिना जलजा केचिद्ब्रह्मिजातास्तथापरे।

समीर प्रभवाश्चान्ये तुरगाः मृगजाः परे।

जलोद्भवा द्विजा ज्ञेया क्षत्रियाः वह्निसम्भवाः।

प्रभञ्जन भवा वैश्या मृगजा शूद्र जातयः।

पुष्पगन्धिर्भवेद्विप्रः क्षत्रियोऽ गुरुगन्धिकः।

घृतगन्धे भवेद्वैश्यो मीनामोदी च शूद्रकः।।

पाँच पाण्डवों में नकुल, जिनका महाभारत में उल्लेख है उन्हें अश्व के बारे में गंभीर जानकारी थी। नकुल ने घोड़ों के बारे में एक ग्रन्थ लिखा था, और भारतीय विद्वानों ने यह सदैव माना है कि नकुल नाम का लेखक और कोई नहीं बल्कि वह युधिष्ठिर के छोटे भाई थे। नकुल के द्वारा लिखे ग्रन्थ इस विषय पर सर्वश्रेष्ठ प्रमाण माना जाता है। भोजराज ने ऊपर लिखे श्लोक को नकुल के ग्रन्थ से ही उद्धृत किया है।

(ख) गजराज– युक्ति कल्पतरु में गज युक्ति अध्याय के अनुसार

ब्रह्मादि जातिभेदेन तेषां भेदश्चतुर्विधः।

विशालाङ्गा पवित्राश्च ब्राह्मणाः स्वल्पभोजिनः।

शूलाविशालावह्वाशाः कुद्धाः क्षत्रियजातयः॥

इसका अर्थ है कि हाथियों को चार वर्णों में विभाजित किया गया है– ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र। जो हाथी शुद्ध है (आदत से साफ), बड़े पैरों वाला और कम मात्रा में चारा खाने वाला (अपेक्षाकृ त), वे ब्राह्मण हैं और वे जो विशाल और भारी कद वाले, बहादुर और क्रोधी स्वभाव के और बहुत खाने वाले हैं वे क्षत्रिय हाथी होते हैं।

भोजराज ने पलकाचार्य के हस्त्यायुर्वेद के प्रसंग में, गर्ग मुनि से उद्धरण दिये हैं।

यह चार प्रकार के हाथी सार्वभौमिक रूप से माने जाते हैं, लेकिन कई आचार्यों ने विभिन्न वर्गों का, बिभिन्न नामों से कोश-रचना-शास्त्र-विशारद से वर्णन करते हैं। प्रख्यात लेक्सिको ग्राफर हेमचंद्र ने लिखा है कि हाथियों का वर्गीकरण भद्र, मद और मिश्र (मिला जुला) नाम से और उनकी विशेषताओं के वर्णन के साथ किया गया है। वैश्य और शूद्र हाथियों को 'युक्ति कल्पतरु' में एकसाथ मिश्र वर्ग में दर्शाते हैं।

(ग) भैंस– परीक्षा अध्याय में 'युक्ति कल्पतरु' लिखते हैं–

तद् यथा

ब्रह्म क्षत्रियविट्शूद्रान्तजा भेदेन पञ्चधा।

भृशं कृष्णाः पवित्राश्च बृहद्वृषण घोनकाः।

बह्वाशिनी मारकाश्च महिषा क्षत्रियजातयः।

स्थलाङ्गा क्षीणशृङ्गाश्च सुक्रुद्धा भारवाहिनः।

अमारका बहबला महिषाः शूद्रजातयः।

सर्वदाजलमिच्छन्ति येऽनपसरत्वा महाजनः।

भारसहाः कुशृङ्गाश्च तेऽन्तजा महिषा मताः।

इसका अर्थ है कि भैंस पाँच जाति के होते हैं, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र और अन्तज। ब्राह्मण भैंस गहरे गाढ़े रंग का होता है, स्वभाव से साफ बड़ी नाक और कानों वाला, बहुत अधिक खाने वाला और ये स्वभाव से घातक होते हैं। क्षत्रिय भैसों की नजर तिरछी, भारी शरीर और महान ताकत और शक्ति, भरपूर मात्रा में खाने वाले और कामातुर, क्रोधित और घातक स्वभाव के होते हैं। वैश्य भैंसों के छोटे या पतले सींग और बहुत शक्तिशाली लेकिन अंग मानो ढ़ीले ढंग से लगे रहते हैं, गुस्से वाले लेकिन घातक नहीं होते और भार ढ़ोते हैं। शूद्र वर्ण के भैंस कमजोर और कम शक्ति वाले, छोटे नाक और सींग वाले, कम खाने वाले और बोझ लेकर चलने वाले होते है। अन्त्यज भैंस हमेशा पानी में रहना पसन्द करते हैं, कमजोर होते हैं, खराब सींगो वाले होते है सुस्त होते हैं और भार ढ़ोते हैं।

(घ) साँड़- वृष परीक्षा अध्याय में 'युक्ति कल्पतरु' लिखते हैं–

ब्रह्मक्षत्रिय-विट्-शूद्र जाति भेदाश्चतुर्विधाः।

शुक्लाङ्गा शुचयोऽक्रुद्धामृदवः शुद्धचेतसः।

अल्पाशिनी बहुबला कृष्णा ब्रह्मजातयः।। इत्यादि...

बैलों को चार वर्ण में विभाजित किया गया है– ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र। ऊपर दिये पंक्तियों के बाद वह विभिन्न जातियों के बैल की विशेषताओं का वर्णन करते हैं– जैसे साफ सुथरे बैल, सफेद रंग

के, हल्के स्वभाव के महान ताकत रखने वाले और परिमित रूप से खाने वाले, ब्राह्मण वर्ण से सम्बन्ध रखते हैं आदि। भोज राज वत्स्य और गर्ग को अपना प्रमाण मानते हुए उनके उद्धृति देते हैं।

(ङ) हिरण/मृग- लेखक भोजराज 'युक्ति कल्पतरु' के परिक्षा अध्याय में लिखते हैं–

पार्थिवादिर्मृगः सर्व्वश्चतुर्जातिभवेत् पृथक्।

सुशृङ्गास्तनु लोमानो ब्राह्मणा मृगजातयः।।

कुद्धाः पश्चरि शृङ्गाश्च क्षत्रियाः खरलोमशाः।

आवर्त्तशृङ्गास्तनवो हरिणावैश्यजातयः

कुशृङ्गा वाप्यशृङ्गाका शूद्राः खरतनूरूहाः।।

ऊपर लिखे श्लोक का अर्थ है– मृग या हिरण चार वर्ण के होते हैं। अच्छी तरह से आकार ली हुआ सींग और मुलायम रोवें वाले हिरण ब्राह्मण वर्ण के होते हैं। वो हिरण जो क्रोधी स्वभाव के और जिनकी सींग लड़ने के लिए उपयुक्त हो और जिनकी रोवें दृढ़ हो वे क्षत्रिय जाति के होते हैं। वैश्य हिरण के सींग मुड़े हुए और शूद्र हिरण के सींग असम्पूर्ण रूप से गठित या अतिरिक्त सींग होते हैं और उनके रोवें बहुत मोटे होते हैं। लेखक ने वत्स्य और सांख्य को इस विषय में प्रमाण माना है।

(च) कुत्ता- युक्ति कल्पतरु, सारमेय परीक्षा में कहते हैं–

ब्रह्मादिजाति भेदेन चतुर्द्धा सर्व्व एव हि।

शुभ्राः दीर्घाः नखरदाः श्वानस्ते क्षत्रजातयः।

कृष्णवर्णास्तनुमुखा दीर्घरोमाण एव च।

अक्रुद्धाः श्रमयुक्ताश्च वै श्वानः शूद्रजातयः।।

इस श्लोक का अर्थ है– इस संसार में हर वस्तु को चार वर्ण में विभाजित किया गया है–- ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र। ब्राह्मण जाति के कुत्ते का रंग सफेद, सीधे कान, हल्की पूंछ, सफेद लंबे और पैने दांत और संकुचित पेट होते हैं। क्षत्रिय जाति के कुत्ते लाल रंग के लटके हुए कान, छोटे रोवें, लंबे नाखून और संकुचित पेट वाले होते हैं। वैश्य जाति के कुत्ते पीले रंग के, छोटे रोवें वाले शान्त स्वभाव के और यदि वे क्रोध में न भी हों तब भी उनके जीभ मुंह से बाहर निकले रहते हैं। शूद्र कुत्ते स्वभाव से नाराज नहीं होते लेकिन शान्त और काले रंग के होते है। उनके मुँह छोटे होते हैं और लंबे रोवें वाले और मेहनती होते हैं।

(छ) बकरी: भरद्वाज के ज्ञान का अनुसरण करते हुये, भोजराज कहते हैं कि काले बकरे देव जाति के होते हैं और बलि के लिए उत्तम हैं। पीले और भूरे रंग के बकरे नर जाति के होते हैं और सफेद जाति के बकरे राक्षस जाति के। इन दोनों जातियों के बकरों को भी बलि चढ़ाया जा सकता है।

(ज) पक्षी– कौआ- बसंत राजा सकुन (Basanta Raja Sakuna) ग्रंथ के वायस सकुन काक चरित्र अध्याय (दिक प्रहरे सुर्य उदय) बृहत् प्रमाणों गुरुदीर्घतुण्डो दृढ़स्वरः कृष्णवपुः सविप्रः।.....

इसका अर्थ है– कौवे पाँच वर्ग में विभाजित हैं– ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र और अंतज। कौवे जो काले रंग के हों, जिनका आकार विशाल हो, जिनके भारी लंबी चोंच हो और दृढ़ स्वर हो वे ब्राह्मण

कृष्णवर्णास्तनुमुखा दीर्घरोमाण एव च।

अक्रुद्धाः श्रमयुक्ताश्च वै श्वानः शूद्रजातयः।।

इस श्लोक का अर्थ है– इस संसार में हर वस्तु को चार वर्ण में विभाजित किया गया है–- ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र। ब्राह्मण जाति के कुत्ते का रंग सफेद, सीधे कान, हल्की पूंछ, सफेद लंबे और पैने दांत और संकुचित पेट होते हैं। क्षत्रिय जाति के कुत्ते लाल रंग के लटके हुए कान, छोटे रोवें, लंबे नाखून और संकुचित पेट वाले होते हैं। वैश्य जाति के कुत्ते पीले रंग के, छोटे रोवें वाले शान्त स्वभाव के और यदि वे क्रोध में न भी हों तब भी उनके जीभ मुंह से बाहर निकले रहते हैं। शूद्र कुत्ते स्वभाव से नाराज नहीं होते लेकिन शान्त और काले रंग के होते है। उनके मुँह छोटे होते हैं और लंबे रोवें वाले और मेहनती होते हैं।

(छ) बकरी: भरद्वाज के ज्ञान का अनुसरण करते हुये, भोजराज कहते हैं कि काले बकरे देव जाति के होते हैं और बलि के लिए उत्तम हैं। पीले और भूरे रंग के बकरे नर जाति के होते हैं और सफेद जाति के बकरे राक्षस जाति के। इन दोनों जातियों के बकरों को भी बलि चढ़ाया जा सकता है।

(ज) पक्षी- कौआ- बसंत राजा सकुन (Basanta Raja Sakuna) ग्रंथ के वायस सकुन काक चरित्र अध्याय (दिक प्रहरे सुर्य उदय) बृहत् प्रमाणों गुरुदीर्घतुण्डो दृढ़स्वरः कृष्णवपुः सविप्रः।.....

इसका अर्थ है– कौवे पाँच वर्ग में विभाजित हैं– ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र और अंतज। कौवे जो काले रंग के हों, जिनका आकार विशाल हो, जिनके भारी लंबी चोंच हो और दृढ़ स्वर हो वे ब्राह्मण

होते है। क्षत्रिय वर्ण के कौवे बहुत बहादुर, उनकी तेज आवाज होती है और उनका रंग नीले और पीले रंग का मिश्रण होता है। वैश्य जाति के कौवे हलके नीले रंग के उनकी चोंच नीले रंग के साथ हल्का सफेद, और स्वर कर्कश होता है।

(झ) सरिसृपः नागः १८ महापुराणों में से एक भविष्य पुराण के पंचमी कल्प में हमें मिलता है–

शुक्ला तु ब्राह्मणी ज्ञेया रक्तातु क्षत्रिया स्मृता
वैश्यातु पीतिका ज्ञेया कृष्णा शूद्रातु कथ्यते।

इस श्लोक का अर्थ है– ब्राह्मण सर्प सफेद रंग के होते हैं, लाल रंग के सर्प क्षत्रिय जाति के, वैश्य जाति के सर्प का रंग सफेद के साथ पीला और शूद्र जाति के साँप का रंग सफेद के साथ काला होता है। अलग अलग जाति के साँप आमतौर पर कम से कम, अलग जगहों में रहते है और दूसरों को दिन के अलग अलग समय पर काटते है। प्रसिद्ध शुश्रुत संहिता जिसकी रचना प्राचीन आचार्य शुश्रुत ने किया था, जिसे अभी आयुर्वेदिक चिकित्सक, आयुर्वेद की सबसे आधिकारिक पुस्तकों में से एक मानते हैं। जिसके चौथे अध्याय कल्पस्थान में सांपों के बारे में और सांप के काटने के उपचार के बारे में बताया गया है। वे सांपों में प्रचलित चार वर्णों के बारे में भी बताते है। अग्नि पुराण, जो एक और महापुराण है उसमें उसी प्रकार से सांपों का चार वर्णों में वर्गीकरण किया गया है। उमास्वाती, एक जैन लेखक ने भी सांपों के चार वर्ण के बारे में लिखा है।

यहाँ यह कहना उचित ही होगा कि नियरकश जो सिकंदर के सेना के एडमिरल थे, जिन पर सेना का दायित्व था और उन्हें भारत

का यह अभियान छोड़ कर जाना पड़ा क्योंकि वे पुरु या पोरस की बहादूरी और सेनापतित्व से भयभीत थे और उनकी सेना ने आगे बढ़कर मगध या गंगारोदी पर आक्रमण करने से इन्कार कर दिया था। बताया गया है कि किसप्रकार भारतीय चिकित्सक सांप के काटे मरीजों का इलाज करते थे। नियरकश लिखते हैं कि यूनानी सैनिक को सँाप के काटने से बहुत पीड़ा का सामना करना पड़ा और उनमें से कई उसके कारण मृत्यु को प्राप्त हुए। यूनानी चिकिस्तक जो यूनानी सेना के साथ थे, उनको इसका इलाज नहीं पता था। सिकंदर ने तब भारतीय चिकित्सकों की मदद ली और एक सैनिक अस्पताल खोला, जहाँ सांप से काटे यूनानी सैनिकों का इलाज होता था और भारतीय चिकित्सकों की सफलता ईतनी अद्भुत थी कि बाद में सिकंदर ने अस्पताल को सभी के लिए खोल दिया। (दुर्भाग्य से सुश्रुत संहिता और भविष्य पुराण में दिये गए आयुर्वेदिक उपचार और औषधी की तैयारी में उपयोग नहीं किया गया है– एक ऐसा क्षेत्र जो अभी भी एलोपैथी ने पूर्णता प्राप्त नहीं किया है।)

निर्जीव वस्तुएं:

(१) अस्त्र (हथियार): युक्ति कल्पतरु अस्त्र युक्ति में लिखते हैं—

अत्र वर्णो विनिर्दिष्टः क्रमादेवं चतुर्विधः।
सितोरक्तस्तथापीतः ब्रह्मादि ष् क्रमात्॥

अस्त्रों के वर्णों को चार में इस प्रकार से विभाजित किया गया है– सफेद, लाल, पीले और काले रंग के हथियार ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र में क्रमशः है।

युक्ति कल्पतरु के लेखक ने ऊपर दिये गये वातश्य को एक विशेषज्ञ के श्लोक का उदाहरण दिया है।

(२) **खड़ग (कृपाण)**: नागार्जुन मुनि द्वारा लिखित प्रसिद्ध ग्रन्थ लौहार्णव के जा त्याध्याय अध्याय में लिखते हैं–

ब्राह्मण क्षत्रियो वैश्यः शूद्रश्चेति चतुर्विधः।

जातिभेदो विनिर्दिष्टः खड्गानां मुनिपुङ्गवैः।।

शुद्धाङ्ग शुद्धवर्णश्च सुनेत्र सुस्वरश्च यः।

मृदुस्पर्शः सुसन्धेयस्तीक्षणधारो महागुणः।।

खड्गं ब्राह्मणजाति तं प्राह नार्गार्जुनो मुनिः।

अन्यक्षते भवेच्छोथो घोरः सर्व्वाङ्ग गोचरः।।

मूर्च्छा पिपासा दाहश्च ज्वरो मृत्युश्च जायते।।

पूर्व के मूनियों द्वारा कृपाण को ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र में वर्गीकृत किया गया था। नागार्जुन मुनि कहते हैं कि कृपाण जो मजबूत और धारदार हो, शुद्ध अंग वाले– अंग की एक तकनीकी भावना है।

ब्राह्मण कृपाण के कारण हुआ एक छोटा घाव, पूरे शरीर में अत्यधिक दर्द का कारण बनता है, मिर्गी, प्यास, रक्त रोग या सूजन के साथ बुखार पैदा करता है और कम समय में घातक साबित होता है।

(३) **शंख–** युक्ति कल्पतरु में शंख के चार जाति का विवरण है। सारे शंख सफेद होते हैं।

तद् यथा–

ब्रह्मादि जातिभेदेन स पुनस्तु चतुर्विधः।

ये स्निग्धमसृर्णाकारा मृदतो लघवस्तथा।

ब्राह्मणाः प्रस्तरा ज्ञेयाः सर्वकर्मसु शोभनाः।।

ये दृढ़ाङ्गा पुरवः तथा शांश-विभागिनः।। इत्यादि...

इसका अर्थ है कि शंख को चार वर्णों में बिभाजित किया गया है–ब्राह्मण, क्षत्रिय आदि। जैसे कि शंख जिनका ऊपरी हिस्सा सुखद और चिकना हो और, ध्वनि में समृद्ध और हल्के वजन वाला हो ब्राह्मण शंख होते हैं जो हर अवसर में शुभ हैं इत्यादि। इस विषय में ब्रह्मकैवर्त, बराह, पद्म और अन्य पुराणों पर विचार किया जा सकता है।

(४) मोती– हीरे, मोती और अन्य रत्नों पर कई ग्रंथ हैं। उन्हें जाँचने के लिए विभिन्न परीक्षण निर्धारित किए गए है ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि वे वास्तविक हैं या अनुकरण है, यह भी पता लगाने के लिए कि वे दोषपूर्ण हैं या नहीं, उनके वर्गीकरण और मूल्यांकन के लिए। प्राचीन और मध्यकालीन भारत में मोतियों का एक तेज और व्यापक व्यापार था। यहाँ तक कि औरंगजेब के शासनकाल में भी हमें फ्रांसीसी व्यापारी तावर्नियर (Tavernier) और अन्यलोग भारत में इस तरह के व्यापार में लगे हुए थे।

हम, कई पुस्तकों में से कुछ का नाम यहाँ दे रहे हैं जिनमें मोती और अन्य रत्नों के बारे में चर्चा पाई जाती है। वे हैं– गरुड़ पुराणम्, भाव प्रकाश, युक्ति कल्पतरु इत्यादि।

ब्राह्मणं पीतशुक्लन्तु क्षत्रियं पीतरक्तकम्।

पीत श्यामन्तु वैश्यः स्यात् शूद्रं स्यात् पीतनीलकम्।।

पहला श्लोक कहता है कि ब्राह्मण मोती पीले और सफेद, क्षत्रिय

मोती पीले-लाल, वैश्य पीले-हरे और शुद्ध पीले नीले रंग के होते हैं।

शितच्छायाः भवेद्विप्रः क्षत्रियश्चार्करश्मिमान्।

पीतच्छाया भवेद्वैश्यः शूद्रः कृष्णरुचिमत्।।

के होते है।

दूसरे श्लोक में कहा गया है कि मोती जिनके चमक में छाया हो वे ब्राह्मण होते हैं, क्षत्रिय मोती सुबह के सूर्य की चमक को उत्सर्जित करते हैं। वैश्य मोती के पास पीले रंग की छाया होती है जबकि शूद्र मोती काले रंग की छाया देते हैं।

(५) हीरे– प्रतिष्ठित आयुर्वेदिक ग्रंथ, भाव-प्रकाश, गरूड़ पुराणम्, युक्ति कल्पतरु, वृहत् संहिता और विभिन्न अन्य पुस्तकों में, हीरे, उनकी वर्णों और उनकी विशेषताओं के बारे में बताया गया है।

भाव प्रकाश कहते हैं–

सतु श्वेतः स्मृतो विप्रो लोहितः क्षत्रियोमतः।

पीतो वैश्योऽसितः शूद्रश्चतुर्वर्णात्मकश्च सः।।

इसका अर्थ है कि सफेद हीरे ब्राह्मण, क्षत्रिय हीरे लाल रंग के वैश्य हीरे पीले रंग के और शुद्ध हीरे काले रंग के होते है।

आयुर्वेद के अनुसार हीरे और अन्य धातुओं के औषधीय गुण होते हैं, और उनकी शुद्धिकरण प्रक्रिया करके उन्हें विभिन्न दवाओं में उपयोग किया जाता है। उनकी दक्षता उनके वर्ण के अनुसार भिन्न होती है। गतिविधियों के हर क्षेत्र में और रसयान (बुढ़ापे और क्षय को रोकने के लिए उपचार) में सफलता प्राप्त करने के लिए ब्राह्मण हीरे सबसे प्रभावशाली होते हैं. क्षत्रिय रोगों को नष्ट कर देता है और

वृद्धावस्था क्षय को रोकता है और वैश्य धन प्राप्त कराता है और शरीर को मजबूत बनाता है, जबकि शूद्र बीमारियों को नष्ट करता है और यौवन बनाये रखता है।

(६) गोमेध (टोपाज)- गोमेध को भी 'गोमेध परीक्षा' में चार वर्णो में बिभाजित किया गया है।

(७) पारा (पारादा): भाव प्रकाश के अनुसार हम पाते हैं कि पारा में वही चार गुणों का वर्गीकरण मौजूद है और उनका रंग उनके वर्णो से निर्धारित होते हैं।

श्वेतं रक्तं तथा पीतं कृष्णं तत्तुभवेत् क्रमात्।

ब्राह्मणः क्षत्रियों वैश्यः शूद्रश्च खलु जातितः।।

इसका अर्थ है कि ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र वर्ण के पारे को अपने सफेद, लाल, पीले और गहरे रंग से निर्धारित किया जा सकता है।

(८) जहर- भाव प्रकाश के पूर्व खण्ड में हमें मिलता है–

ब्राह्मण पाण्डरस्तेषु क्षत्रियो लोहितप्रभः।

वैश्यः पीतोऽसितः शूद्रो विष उक्तश्चतुर्विधः।।

रसायणे विषं विप्रं क्षत्रियं देहपुष्टये।

वैश्यं कुष्ठ विनाशाय शूद्रं दध्याद्वधाय च।।

इस श्लोक का अर्थ है कि ब्राह्मण वर्ण के विष का रंग हल्का होता है, क्षत्रिय विष लाल रंग का, वैश्य विष पीले रंग का और शूद्र विष गहरे रंग का होता है। उनकी उपयोगिता के बारे में कहें तो यह

कहा जाता है कि सामान्य स्वास्थ्य के लिये ब्राह्मण जहरों का उपयोग किया जाना चाहिए। क्षत्रिय जहरों का उपयोग शरीर की पोषण के लिए किया जाता है, जबकि कुष्ठ रोग के इलाज में वैश्य जहरों का उपयोग होता है और हत्या के लिए, शूद्र जहरों की आवश्यकता होती है। ग्रह रत्नों को उनके गुण उपयाग एवं द्रव्य गुणों के आधार पर राजा भोज ने वर्गीकरण किया जैसा कि इन्द्रनील परीक्षा, रेशम के धागे, चामर, ध्वज आदि के लिये भी किया– जिससे उनकी गुणमान चेतना के सम्बन्ध में गंभीर ज्ञान, अनुभव का परिचय मिलता है और हिन्दुओं की उन प्रज्ञा एवं अन्तर्दृष्टि के प्रमाण है जिसके बलपर वे उन्हें सत्व, रज और तम गुण पर विचार करते हैं जिससे निखिल विश्व परिव्याप्त है।

(९) उसीप्रकार युक्ति कल्पतरु में रत्न जैसे मरकत मणि हरे रंग का पन्ना, पुष्पराग (एक जाति का पुखराज), राज छत्र, पद्मराग (ल-ाल मणि-Ruby), विद्रुम (Coral-प्रबाल) वैदूर्य (Sapphire-नीलमणि), रेशमी वस्त्र, रोवें के वस्त्र ("संदर्भ-युक्ति कल्पतरु" में उपकर्म युक्ति, वस्त्रादि युक्ति), रक्षा यंत्र (कवच), उपकरण राजत्व का अधिकार चिह्न इत्यादि वर्णित है। वरिष्ठ वकील एवं विद्वान श्री नरेन्द्रनाथ चक्रवर्त्ती व ट्रुथ पत्रिका में सन १९६९ से १९७१ तक धारावाहिक रूप से इन अनमोल संग्रह को उपस्थापित किया (अपना ऋषि ऋण निभाने के प्रयास में) जिसका सारांश यहाँ उल्लिखित हुआ है।

वर्ण व्यवस्था के लाभ के बारे में कहा जाय तो यह कहना होगा कि जब बौद्ध धर्म भारत से जाने लगा, पश्चिमी पंजाब और पूर्वी बं-गाल बौद्ध धर्म के गढ़ थे। वर्ण व्यवस्था का प्रभाव न होने के कारण यहाँ के लोगों का धर्म परिवर्तन (इसलाम की ओर) बहुत तेजी से

होने लगा। जबकि भारत के बाकी प्रान्तों में या किसी अंश में यह कभी कभार ही होता था। पूर्वी बंगाल जहाँ अधिकतर लोग बौद्धधर्म में धर्मांतरित हुए थे, जब इस्लाम का प्रभाव आया सभी बौद्ध, इस्लाम में धर्मान्तरित हो गये, बहुत कम ही हिन्दू ने धर्म को अपनाया। इसी कारण पूर्व बंगाल में ८० प्रतिशत आवादी मुसलमानों की थी, जबकि पश्चिमी बंगाल के वर्धमान डिविजन में उनकी संख्या १७ प्रतिशत थी जैसा कि उत्तर प्रदेश में, जहाँ मुस्लिम शासकों का गढ़ था और सदियों से उनके अधीन था। इसी प्रकार जाभा एक हिन्दू राष्ट्र था। वहाँ शक्तिशाली साम्राज्य था, जैसा कि शैलेन्द्र साम्राज्य जो बौद्ध धर्म में परिवर्तित होते ही अस्तित्व खो बैठा। बौद्ध जाभा में बहुत जल्द ही इस्लाम में धर्मान्तरण प्रारम्भ हो गया लेकिन बाली द्वीप, जहाँ जाति व्यवस्था फला फूला था और आज भी फल फूल रहा है वहाँ इस्लाम कभी अपना कदम नहीं पसार सका और यह अभी भी हिन्दू राष्ट्र है। कोई भी इस्लामिक शक्ति, जाति के किलेको नहीं ढ़हा सका, इस छोटे से द्वीप में। जब डच ने इन्डोनेशिया पर आक्रमण किया तो बालीको हिन्दू साम्राज्य पाया।

विशिष्ट निरीक्षक जैसे जर्ज बार्डवुड, सर जन वुडरफ ने भी अपनी गंभीर सोच व्यक्त करते हुये कहा है कि जाति व्यवस्था (वर्णाश्रम व्यवस्था) के प्रभाव से ही हिन्दुसमाज संयुक्त तथा एक है।

जापान जो जातिवाद से भरा हुआ है, जहाँ अछूत एटा, जो वहाँ की १/१०वीं आवादी का अंश है विश्व का प्रथम श्रेणी का शक्तिशाली देश बना जिसके कौशल ने पूरे यूरोप और रूस को हिला दिया। जबकि जातिभेद न मानने वाला वर्मा, जो ब्रिटिश शासन के अधीन था

अब आजाद है परन्तु वहाँ सैनिक सत्ता ने आसानी से शासन अधिकार जमा लिया, जिनकी प्रभाव वहाँ एक राष्ट्रीय खतरा बन गया है।

हाल ही में रोहिंग्या समस्या (जो बौद्ध धर्म से इस्लाम में परिवर्तित हुए थे) ने एक नया आयाम जोड़ा है और उसपर अन्तराष्ट्रीय ध्यान आकर्षित हुई है।

४. वर्ण व्यवस्था की अवधारणा

अहिर्बुध संहिता में यह कहा गया है कि मनु, प्रद्युम्न विष्णु से जन्मे थे। उनके संकल्प से ब्राह्मण दम्पति की उत्पत्ति उनके मुँह से हुई, क्षत्रिय दम्पति की उत्पत्ति उनकी छाती से हुई, वैश्य दम्पति की उत्पत्ति उनकी जांघ से हुई और शूद्र दम्पति की उत्पत्ति उनके चरणों से हुई। उनका देह दिव्य मनोमय था, तभी वे सभी मनु कहलाते थे। और वे वर्ण के मूल स्त्रोत से उभरे (आदि वर्ण योनि)। सभी जीव अपने कर्म के अनुसार महत्व से या चैतन्य अपने मूल योनि को पाकर ब्राह्मण आदि भौतिक रूपों को प्राप्त करते हैं। यह सब क्रियायें प्रकृति के मनोमय कोश में होता है। मनु के मुख से अर्थात् ब्रह्मतेज से– उत्सर्जित सर्वोच्च ऊर्जा या तीव्र प्रकाश। मनु की छाती से क्षात्र तेज- (मनु के वक्ष स्थल उत्सर्जित तीव्र क्षत्रिय प्रकाश, वैश्यतेज– जो ऊर्जा या तीव्र प्रकाश मनु की जांघ से उत्सर्जित हुई हो और मनु के पद से शौद्र तेज– जो मनु के चरणों से विकीरित ऊर्जा हो।

प्रथमद्युति या तीव्र प्रकाश सत्व गुम के ओतप्रोत है, दूसरी ऊर्जा या तीव्र प्रकाश सत्व और राजस गुणों का मिश्रण है, तीसरा तीव्र प्रकाश या ऊर्जा राजस और तामस गुणों के मिश्रण से पूरी तरह व्याप्त हुआ और चौथा तीव्र प्रकाश तामस गुण से भरा हुआ। मनु के एकीकृत

अवतार को पुरुष कहते हैं जो कि प्रति मानसिक स्तर से परे मनोमय पुरुष है। यह विश्व, ज्ञान से अर्थात् पुरुष से उत्पन्न है।

भगवान मनु (१२/९७) कहते हैं–

चातुर्वर्ण्यं त्रयोलोकाश्चत्वारश्चाश्रमाः पृथक्।

भूतं भवद्भविष्यञ्च सर्व्ववेदात् प्रसिद्धति।

चारों वर्ण, तीनों लोक, चारों आश्रम, भूत, वर्तमान और भविष्य, यह सभी वेद से ही विकसित हुए हैं। सृष्टि के प्रारंभिक चरणों में कोई वर्ण आश्रम या कोई वर्ण संकर नहीं था। सभी आरण्यक थे और तपोवन में रहते थे तपस्वी या त्यागी की भाँति। सभी ब्रह्मनिष्ठ ब्राह्मण थे। धीरे धीरे अपने कर्म के आधार पर (अपने पूर्व जन्मों में) उन्होंने अलग अलग वर्ण प्राप्त किया।

य इह रमणीय चरणा अभ्याशो य हत्ते

रमणीयां योनिमापद्येरन् ब्राह्मण योनिं वा

क्षत्रिय योनिं वा वैश्य योनिं वा।

य इह कपूय चरणा अभ्याशो य हन्ते कपूयां

योनिमापद्येरण्श्व-योनिं वा शूकर योनिं वा चण्डाल योनिं वा (छान्दोग्य उपनिषद ५।१०।७)

जिसके कर्म इस जन्म में महान हैं अगले जन्म में महान होंगे, जैसे ब्राह्मण, क्षत्रिय व वैश्य जन्म लेकर। जिनके कार्य इस जन्म में कदर्य है, उन्हें कुत्ते, शूकर या चंडाल जैसे निम्न जन्म लेना पड़ता है।

हम विभिन्न शास्त्रों से अधिक श्लोकों का उदाहरण देने से बचते

हैं जो यह साबित करते हैं कि वर्ण या जाति जन्म के आधार पर निश्चित होता है और हर मनुष्य का अपने आचरण के द्वारा शास्त्र के निर्देशों का पालन करते हुये निर्धारित पाँच यज्ञों की पूर्ति के लक्ष्य को प्राप्त करने का प्रयास करना है।

अकृतज्ञमानार्य्यं च दीर्घ रोषमनार्ज्जवम्।

चतुरां विद्धि चाण्डालान् जात्या भवति पञ्चमः। (इति गारुड़े)

चंडाल पांच प्रकार के होते हैं– पुरुषकार या आचरण पर आधारित चार प्रकार के, और एक जो जन्म से। वे जो अकृत, शास्त्र को उल-घन करने वाले, वे जिन्हें बहुत देर तक क्रोध रहता हो, कुटिल और धोखेबाज ये भले ही ब्राह्मण हों– ये स्वभाव से चार तरह के चंडाल है। पाँचवा प्रकार का चंडाल वह है जो सिर्फ जन्म से हो। ईश्वर के आदेशानुसार कई और तरह से हर हिन्दू अछूत होते हैं, जैसे कि, परिवार में मृत्यु या जन्म, रजोधर्म, मलत्याग, सुबह स्नान आदि से पहले, जूते पहनने पर, किसी मृत शरीर को छूने से या किसी नये जन्मे शिशु को छूने से। इससे साबित होता है कि हिन्दू पाप को घृणा करते हैं, पापीयों को नहीं। पापपूर्ण आचरण, पापपूर्ण जन्म, पाप से जु-डी कोई भी कार्य, हिन्दू को अछूत बनाती है। यह विरोध या नफरत नहीं है बल्कि उसे पाप की क्रूरता याद दिलाने के लिए है ताकि वह विनम्र रहे और भविष्य में पाप का संग करने से और, और अधिक पाप का संचय करने से बचे जो अगले जन्म में गंभीर परिणाम दे सकते हैं।

हिन्दू अस्पृश्यता प्राण रक्षक है– हिन्दू अस्पृश्यता सर्जन के वे दस्ताने हैं जो समाज को भयानक पापों से बचाती है, जो पापों को लेकर जन्म ग्रहण करते हैं उनके आचार और भक्ति के विमल प्रभाव

से ही उनके शरीर को शुद्ध करना सम्भव है।

अतः यह पाप है जो मायने रखता है न कि पापी। क्योंकि जैसे ही वह पापी अपने आप को भगवान के प्रति भक्ति के आश्रय से पाप से मुक्त करा लेता है, तब उसे सम्मान दिया जाता है।

स कथं श्वपचो यस्तु भगवद् भक्तिमानसः।

अस्पृश्य अस्पृश्य नहीं हो सकता, जिसका मन ईश्वर के प्रति प्यार से भरा हो।

चण्डालोऽपि द्विज श्रेष्ठ हरिभक्ति परायणः।

हरिभक्ति विहीनास्तु द्विजोऽपिश्वपचाधमः।।

एक चंडाल जिसने अपना मन और आत्मा श्री हरि के पवित्र चरणों में भेंट दे दिया हो, वह ब्राह्मण से भी श्रेष्ठ है। एक ब्राह्मण बिना भक्ति के, चंडाल से भी बुरा है।

वैष्णवो वर्णवाह्योपि पुणातिभुवनत्रयम्।

तीनों लोक चंडाल के पवित्र चरणों की धूल से पवित्र होता है, यद्दपि वह चारों वर्णों के बाहर है, जब वह विष्णु का भक्त होता है।

विप्राद् द्विषड़गुणयुतादरविन्दनाभ।
पादारविन्द विमुखात् श्वपचो वरिष्ठम्।
मन्ये तदर्पित तमनोवचनेहितार्थ
प्राणंपुनाति सकुलं न तु भूरिमानः।।

(भागवत् ७।६।१०)

यद्दपि ब्राह्मण जो सभी बारह गुणों के साथ सम्पन्न है, परन्तु

श्रीभगवान के चरण कमलों में भक्तिहीन है, उससे एक चंडाल, जिन्होंने अपना मन, वचन, कर्म, धन और जीवन भगवान को समर्पित किया है, उस ब्राह्मण से श्रेष्ठ है। क्योंकि चंडाल अपने पूरे कुल को पाप से मुक्त करता है जबकि ब्राह्मण उन गुणों के होते हुए नहीं कर सकते है।

अहोवत् श्वपचोऽतो गरीयान्। यज्जिह्वाग्रे वर्तते नाम तुभ्यम्)

(भागवत ३/३/३७)

यदि कोई चण्डाल आपके महिमा का कीर्त्तन और नाम का जप करते हैं, तो वह सभी प्राणियों के पूज्य है। स्वयं श्री भगवान कहते हैं–

न मे प्रियश्चतुर्वेदी मद्भक्तः श्वपचोऽपि यः।

तस्मै देयं ततो ग्राह्यं स च पूज्यो यथाह्यहम्।।

ब्राह्मण, जो चारों वेदों को भलीभाँति जानता हो उससे मेरा चण्डाल अधिक प्रिय है। उन्हें उपहार दान में (सत्पात्र मानकर) देना चाहिये, उनसे दान ग्रहण करना चाहिये और उन्हें मेरी तरह से ही पूजा करना चाहिये।

५. महर्षि विश्वामित्र और भार्गव राम या परशुरामः

महाभारत में हमें ऋषि विश्वामित्र का उदाहरण मिलता है जिन्हें ब्राह्मण की पदवी, बार-बार विफलता के बाद मिला था। उनका जन्म, ऋषि रिचिक द्वारा किये गये हवन और यज्ञ की दैवी शक्ति से उत्पन्न चरु (दूध चावल से तैयार) से हुआ था। ऐसा कहा जाता है कि ऋषि रिचिक अपने पत्नी की पवित्रता और सेवा से प्रसन्न होकर उन्हें ऐसा बालक देना चाहते थे जो उच्च गुणों के साथ एक महान वेदज्ञ ब्राह्मण हो और इसी कारण चरु को बनवाया गया और उनसे उनके

मासिक धर्म अवधि के बाद एक यज्ञ गूलर के पेड़ (ब्राह्मण श्रेणी) को गले लगाने के लिए कहा और फिर चरु का सेवन करने को कहा जिसे मंत्रों के जप से शुद्ध किया गया था। उनकी पत्नी के अनुरोध पर ऋषि ने एक और चरु बनाया जो ऋषि पत्नी की माताजी (राजा गाधी की पत्नी जिनका कोई पुत्र सन्तान नहीं था) के पुत्र प्राप्ति के लिए— जिसमें अतुलनीय शौर्य के साथ एक बहादुर क्षत्रिय का गुण हो। उन्हें अपने मासिकधर्म अवधि के बाद एक अश्वत्थ वृक्ष को गले लगाने के बाद चरु का सेवन करने को कहा गया। लेकिन सत्यवती की माता ने उन्हें प्रभावित कर यह प्रक्रिया उलट दिया ताकि वे एक वेदज्ञ ब्राह्मण पुत्र को जन्म दे सकें। उन्होंने विश्वामित्र को जन्म दिया जिनमें सभी ब्राह्मणोचित संस्कार एवं गुण और विद्यमान थे। चरु जो ऋषि रिचिक ने सत्यवती के माता के लिए बनाया था, जिसके बदले सत्यवती ने उसे ग्रहण ताकि वह स्पष्टरूप से एक शक्तिशाली और बहादुर क्षत्रिय को जन्म देने के लिये था। सत्यवती ने रोते हुए ऋषि रिचिक से इस वरदान को आंशिक रूप से बदलने के लिए प्रार्थना किया। ऋषि रिचिक ने स्वीकार कर लिया और जमदग्नि का जन्म सत्यवती के पुत्र के रूप में हुआ, जिनका पुत्र जामदग्न राम था, भार्गव राम जिन्हें परशुराम भी कहा जाता है और उनमें वे सभी भयंकर गुण थे जिन्हें सारा विश्व जानता है। लेकिन यह एकान्त घटना ऋषि रिचिक की सच्चाई, तपस्या और दिव्य शक्ति का अनन्य परिणाम था। इसके बावजूद, ऋषि विश्वमित्र निरन्तर और लंबे तपस्या के बाद ब्रह्मर्षि बन पाये। यह महाभारत में एकान्त घटना के तौर पर उभरा है (अनुशासन पर्व, चतुर्थ अध्याय)

६. मातंग को ब्राह्मणत्व नहीं प्राप्त हुआ– महाभारत के अनुशासन पर्व के २७ से २९ वे अध्याय प्राचीन मातंग गार्धवी काण्ड से हमें जानकारी मिलती है कैसे एक ब्राह्मणी स्त्री (जो एक धार्मिक ब्राह्मण की पत्नी थी) जिसे एक नाई ने अपवित्र किया था, उसके गर्भ से मातंग का जन्म हुआ। उनमे अच्छे गुण एवं महान तपस्या के होते हुए भी उन्हें चंडाल माना जाता था। हर बार भगवान इंद्र उनके सामने प्रकट होते, और उनसे कहते कि ब्राह्मण का शरीर पाने के लिए हजारों, लाखों वर्ष लग जाते हैं, क्रमशः विवर्तन के द्वारा जानवरों से, पुक्कश या चंडाल, शूद्र, वैश्य, क्षत्रिय, ब्राह्मण, एक क्षत्रिय ब्राह्मण इस क्रम में एक वर्ण से दूसरे में ऊँचा उठता जाता है। ब्राह्मण ऐसा व्यक्ति है जिसमे पवित्रता के विशुद्ध गुण, सभी प्राणियों के प्रति प्यार, त्याग आदि गुण होते हैं। हाँ, कई व्यक्ति जो उस वर्ण के हैं, उन गुणों से रहित हैं, लेकिन सभी प्राणियों के कल्याण के लिए प्राकृतिक प्रणाली का उल्लंघन करना असंभव है। सहस्त्रों वर्षों की कठोर तपस्या के बाद भी इंद्र उसे ब्राह्मणत्व नहीं प्रदान कर सके, चंडाल जन्म से। अन्त में उनकी प्रार्थना पर उन्हें आशीर्वाद दिया और उन्हें छंदोदेव बनाया, जो अपने गुणों के लिए अत्यधिक प्रसिद्ध थे और महिलाओं द्वारा जिनकी पूजा की जाती थी।

७. वीतहव्य प्रसंग– एक और भी अलग प्रकार की घटना का उल्लेख है। महात्मा शर्याति की वंशावली में, मनु के पुत्र (क्षत्रिय), महाराजा वत्स्य का जन्म हुआ, जिनके दो पुत्र हैहै और तालजंघा थे। हैहै बाद में वीतहव्य के नाम से जाने जाते थे। वीतहव्य की दस राणियाँ थी और सौ पुत्र थे जो पराक्रमी थे जिन्होंने काशी के राजा दिवोदास

के वंश का विनाश, कई युद्धों में, बार-बार हमले से किया था। राजा दिवोदास ने अंतत: महर्षि भरद्वाज के पास शरण लिया और उनकी कृपा और यज्ञ से एक महाशक्तिशाली पुत्र प्रतर्दन पैदा हुआ जो जन्म के बाद से ही एक १३ साल के लड़के जैसा बड़ा हुआ, उसने उसके बाद धनुर्वेद का अभ्यास किया, ऋषि शक्ति के माध्यम से अत्यधिक शक्तिशाली बन गया, युद्ध में गया और प्रतिशोध में वीतहव्य के सभी सौ पुत्रों को मार डाला। अन्त में, हारे एवं बड़ी निराशा के लिये वीतहव्य ने भृगु के आश्रम में शरण ली। प्रतर्दन ने सबसे शक्तिशाली ऋषि भृगु से वीतहव्य को छोड़ देने के लिये प्रार्थना की। लेकिन, ऋषि भृगु ने उससे कहा कि उनके आश्रम में सिर्फ ब्राह्मण ही हैं। इस बात से प्रतर्दन बहुत प्रसन्न हुए, क्योंकि वीतहव्य अपना क्षत्रिय वर्ण खो चुके थे, उनका उद्देश्य अब पूरा हुआ। उन्होंने ऋषि भुगु को प्रणाम किया और चले गये। भृगु जैसे शक्तिशाली ऋषि ने जब से उसे ब्राह्मण की प्रतिष्ठा प्रदान किया, उनके बाद के बच्चे सभी महान गुणों के साथ वेदों को निपुणता से जानते थे। बाद में, वीतहव्य का एक पुत्र सन्तान हुआ जिसका नाम ग्रित्समद था। वह महात्मा थे, और उनके वंश में भविष्य में सभी धार्मिक ब्राह्मण हुये। यह एक बहुत ही असाधारण प्रसंग था और ऋषि भृगु के हस्तक्षेप और ब्रह्मवाक्य का प्रभाव था। अपवादों से ही वास्तव में विधि प्रमाणित होते हैं (अनुशासन पर्व, ३०वाँ अध्याय)।

स्वजातीय आवादी में मेंडेलीय गुणों के विस्तार

करेन्ट सायेन्स पत्रिका (Current Science Vol-5/No. 12) खण्ड ५। संख्या १२) में पूर्णिया बिहार के पाँच जन गोष्ठीओं में तीन मेंडेलीय गुणों के विस्तार "शीर्षक प्रबंध जो पूर्णिया कालेज के प्राणी विज्ञान विभाग के बी. एन. पाण्डे, पी. के. एल दास, ए. के. मित्रा और ए. के झा ने लिखा था उसका सारांश उपस्थापित है।

स्वजातीय आवादी में मेंडेलीय गुणों के विस्तार के विषय में पूर्णिया कालेज के प्राणीविज्ञान विभाग के बी. एन. पाण्डे, पी. के. एल दास, ए. के मिश्रा और ए. के. झा ने करेन्ट सायंन्स पत्रिका के खण्ड ५ ।संख्या १२ (Current Science-Vol-5, No. 12 में "पूर्णिया बिहार के पाँच जन गोष्ठीओं में तीन मेंडेलीय गुणों के विस्तार (Incidence of three Mendelian traits in the indegenious populations of Purnia, Bihar by B. N. Pandey, P. K. L. Das, A. K. Mishra and A. K. Jha, Department of Zoology, Purnia College, Purnia 854301, India) शीर्षक वैज्ञानिक गवेषणा पत्र लिखा है।

पूर्णिया बिहार के स्वजातीय आवादी में तीन मेंडेलीय गुण यथा—ए. बि. ओ रक्त विभाग (ग्रुप), आर. एइच ग्रुप (Rhesus factor) एवं पि. टि. सि (फिनाइल थायोकार्बामाईड स्वाद क्षमता-Phenyl Thio Carbamide Tastalibility) का अध्ययन पाँच स्वजातीय जनसमूह (आवादी) में एकाएक चयन किये गये प्रतिनिधि नमूने के माध्यम किया गया। प्राणीकोष में क्रोमोजोम (रंग को पकड़ने में समर्थ धागे जैसे बनावट) पर एलिल (allele) किसी जीन व अनुवंश (gene) के एक या अधिक संभावित रूप जो क्रोमोसोम में एक ही स्थान पर पाये जाते हैं) की बारंबारता का हिसाब लगाया गया एवं एक जोड़ी जनगोष्ठी के बीच जैविक दूरी, नी (Nei) के सूत्र के द्वारा निर्णीत किया गया। आनुवंशिकी दूरी

(Genetic distance) के आधार पर दो प्रधान गुच्छे (Clusters) मिले एक मुस्लिम और दूसरा अ-मुस्लिम (राजपूत, ब्राह्मण, बनिया एवं कायस्थ (distribution) एक विशेष लक्षण के बंटन व विभाजन (genetic analysis) एवं आनुवंशिक विश्लेषण के आधार पर यह निर्णय लिया जा सकता है कि सारे मनुष्य समाज का अनुवंश एक सर्वसामान्य (Common) अनुवंश कुण्ड (genepool) से लिया गया है। एक या अधिक अनुवंश जीन (gene) की बारंबारता पर जनगोष्ठीयाँ एक दूसरे से पूर्णतया नहीं अपितु आपेक्षिक रूप से भिन्न हैं। मनुष्यों में जैविक वैचित्र (genetic diversity) जनगोष्ठी के जाति संबंधी व भौगोलिक पृष्ठभूमि पर निर्भर है। (बलगीर आर. एस, मैन इन इंडिया, १९९२, ३२ पृ. २९३-३०७)।

भारत में जातिविभाग एवं सवर्ण विवाह के कारण मानव समाज में बहुत सारे gene pool अनुवंश कुण्ड का उद्भव हुआ है। इस गवेषणा का उद्देश्य था पूर्णिया विहार के पाँच जातों के अनुवंश कुण्ड gene pool में अनुरूपता व विभिन्नता की मात्रा का पता लगाना। ये पाँच जाति ही पूर्णिया जिले के प्रधान जाति हैं—ब्राह्मण, राजपूत, कायस्थ, बनिया और मुस्लिम, घर घर जाकर हर परिवार से एक व्यक्ति को परीक्षण के लिये लिया गया। प्रामाणिक विधि से सारी परीक्षायें वैज्ञानिकों के मतानुसार विजातीय (Inter racial) विवाह के अनुवंश की भयानक दूरी के कारण जो अहितकारी व हानिकर प्रभाव वाले अनुवंश नीचे दबे हुये थे वे प्रकट होने लगते हैं और उनके कुप्रभाव दिखाई देते हैं।

मुस्लिम व ईसाई सम्प्रदाय में धर्मान्तरण करने की प्रक्रिया तेज रहने के कारण तथा मध्य प्राच्य, अफ्रीका, युरोप व एशिया में निवास करनेवाली जनता में अनियंत्रित विवाह के कारण इन अहितकारी सम्भावनाओं की वृद्धि एवं सगोत्र व सपिण्ड के बीच विवाह के फलस्वरूप दबे हुये (recessive) प्रायः अहितकारी अनुवंश gene के प्रभाव के प्रकट होने

की सम्भावना में वृद्धि होती है। सगोत्र व परिवार में घनिष्ठ सम्पर्क के बीच विवाह के कारण कई शारीरिक व्याधि जैसे फिनाइल किटोनिओरिया (Phenyl Ketoneuria), गैलेक्टोसीमिया (Galactosaemia), मधुमेह सदृश फीब्ल् माईन्डेडनेस (Feeble mindedness) मस्तिष्क की कमजोरी, हीमोफीलिया (कट जाने पर खून बहना बन्द न होना) आदि जन्म से हुए रोग की सम्भावना बढ़ती है। अति घनिष्ठ सम्पर्क के विवाह (चचेरे फुफेरे भाई बहन इत्यादि) से उत्पन्न बच्चों में केवल मात्र आधे ही स्वस्थ स्वाभाविक होते हैं। अटोसोमल रेसेसिभ होने के कारण और कुछ भयानक रोग जिनके प्रभाव बढ़ते हैं वे हैं— (i) Alkaptonuria, (ii) Hepotoenticular degeneration, (iii) Fried rich's Ataxia, (iv) Scaputohumere type of myopathy, (v) Dystrophic Myotonica, (vi) MEM (Multiple Endocrine Neoplasia Type I & II, (vii) Hurler's syndrome (viii) Hunter's syndrome। निकट सम्पर्क के बीच विवाह से उत्पन्न रोग जो बच्चों में पाये जाते हैं— थैलासीमिया (Thalacaemia) सिक्ल् सेल एनीमिया (Sickle cell anaemia), सीजोफ्रीनिया (Schizophrenia) आदि (H. M. Kingston British Medical ground)। रूस, अमरीका, इंगलैंड, इजिप्ट से प्रारंभ कर अन्दामान तक सर्वत्र ऐसे असंख्य उदाहरण उपलब्ध हैं।

विश्व इतिहास इसका साक्षी है कि जब युरोप अफ्रीका आदि महादेशों में बाढ़, भूखमरी, महामारी हुई तो क्वारशिओरकर पेलेग्रा रिकेट्स रोगों का विशेष प्रादुर्भाव हुआ। जबकि भारत के प्रान्तों में बाढ़, महामारी, सूखा प्रतिवर्ष होता था लेकिन खाद्याभाव, भुखमरी के बावजूद इन अपोषण के कारण शारीरिक व्याधि इनकी अपेक्षा में बहुत ही कम थी। भारतवर्ष की जाति प्रथा व ऋषि प्रणीत विवाह व्यवस्था का पालन इसका एक प्रधान कारण है जो आनुवंशिक सुस्थिरता genetic stability लाने में सहायक है एवं आनुवंशिकी स्रोत genetic drift (बहाव) को काफी हद तक रोकने

में समर्थ है।

इस अनुसंधान में ब्राह्मण एवं कायस्थ के बीच आनुवंशिकी दूरी सबसे कम (०) (०.००७१) एवं राजपूत तथा मुस्लिम के बीच सबसे अधिक (०.१९२७) पाया गया।

जिन जनगोष्ठीओं पर अनुसंधान चलाया गया उनकी आनुवंशिकी दूरी के परिणाम से यह स्पष्ट है कि दो प्रधान गुच्छ (Cluster) एक मुस्लिम और दूसरा अमुस्लिम (राजपूत, ब्राह्मण, बनिया एवं कायस्थ) के बनते हैं। एक ही जैसी (सामान्य) वंश परंपरा के बावजूद, मुस्लिम, हो सकता है सगोत्र एवं सपिंड (consanguinous) विवाह के कारण एक संपूर्ण पृथक अलग गुच्छ बनाते हैं।

आनुवंशिकी दूरी के आधार पर यह इस उपसंहार पर आया जा सकता है कि राजपूत, बनिया, कायस्थ, ब्राह्मण के अनुवंश कुंड (gene pool) आपस में अलग हैं। (चित्र-१)

इन वैज्ञानिकों ने प्रोफेसर एस. पी. सिन्हा, जंतु विज्ञान विभाग, भागलपुर विश्वविद्यालय तथा प्रोफेसर एम. के. भासिन, मानव विज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रति मूल्यवान सलाह के लिये आभार व्यक्त किया है।

स्मृति शास्त्र जैसे कि (सत्य युग के लिये मनुस्मृति, त्रेतायुग के लिये गौतम संहिता, द्वापरयुग के लिये शंख लिखित संहिता तथा कलियुग के लिये पराशर स्मृति) के अनुसार ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य— अर्थात्, द्विज (जिनका उपनयन संस्कार होने के कारण दुबारा जन्म हुआ ऐसा माना जाता है) उनका अपने ही वर्ण में (सवर्ण) एवं पिता से अन्य गोत्र में (असगोत्र) और माँ के असपिण्ड के साथ विवाह होना है।

उद्वहेत द्विजो भार्यां सवर्णां लक्षणान्विताम्।

असपिण्डा च या मातुः असगोत्रा च या पितुः।

इन शास्त्र सिद्धान्तों के पालन के फलस्वरूप भारतीय समाज में

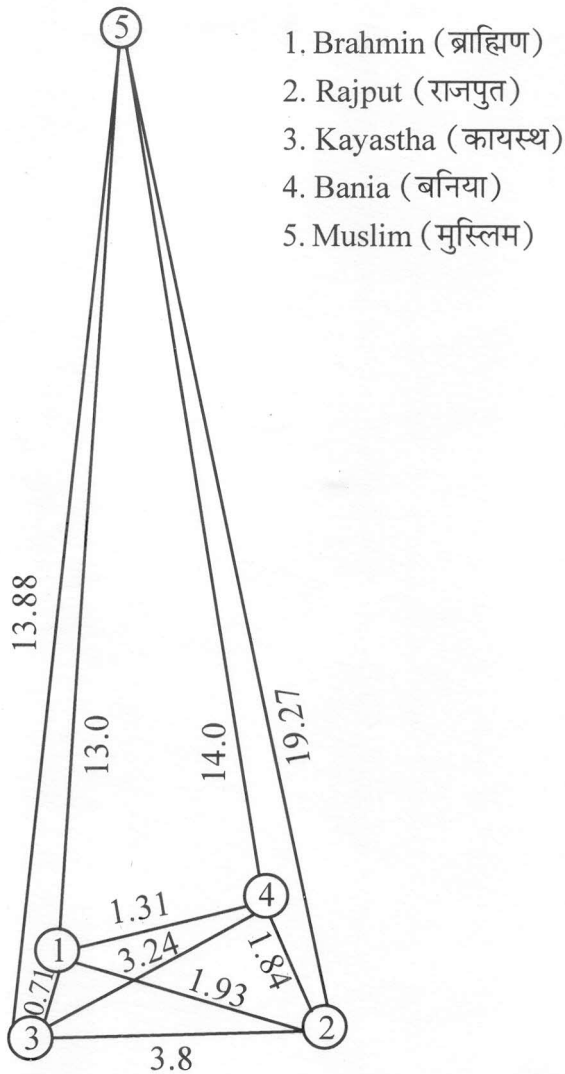

Figure 1. A diagrammatic representation of genetic distance among five population groups of Purnia Bihar.

भौगोलिक एवं भाषा की अपार विभिन्नता के बावजूद तथा वृत्ति व रोटी की खोज में एक प्रान्त से दूसरे प्रान्त में यात्रा व विदेशीओं के आक्रमण एवं अनुप्रवेश के कारण अनियंत्रित भिन्नता के रहते हुये भी विशाल अनुवंश की नींव नहीं हिल पाया है।

इस प्रकार के जन्म से ही रोगग्रस्त व्यक्तिओं की संख्या,, जिस जनगोष्ठी में वर्णाश्रमाचार के अनुसार विवाह होता है उसकी तुलना में अवाध अशास्त्रीय विवाह व निकट सम्पर्क में विवाह करनेवालों में अनेक अधिक होने की सम्भावना है।

इस शोधकार्य से यह प्रमाणित है कि रक्त का वर्ण लाल होने से ही सबकुछ एक नहीं है— इनमें गुण के भेद—जाति वर्ण आदि के आधार पर भी पाया जाता है— यह सिद्ध है। अनुवंश की प्रवेशता एवं प्रकाश penetrance and expressivity अनेक कारणों पर निर्भर हैं जिसमें परिवेश एक प्रधान कारण है। परिवेश व प्रकृति के प्रभाव एवं समाज में व्यवहारिक उसकाव या मध्यस्थता के फलस्वरूप भी अनुवंश के प्रकट होने में, आश्चर्यजनक परिवर्तन भी सम्भव है—जिसके कारण रत्नाकर बाल्मीकि बनते हैं। तरुणी आसक्त कालिदास कवि कालिदास बनते हैं, अपनी पत्नी में आसक्त तुलसीदास गोस्वामी तुलसीदास बनते हैं।

ऐसा सत्संग का फल, मानसिक संग का असर अनुवंश के साथ परिवेश का महा प्रभाव दर्शाता है। साम्प्रतिक शोधकार्य से पता चला है कि हर कोश में वैद्युतिक चुम्बकीय (electromagnetic force) प्रभाव उत्पन्न होते हैं एवं वे प्रभावित करते हैं।

चेतना का परिणाम सिद्धान्त (Quantum theory of consciousness)

सत्व, रज, तमोगुण की बात स्पष्टतः जड़ विज्ञान (भौतिक विज्ञान) आज भी यदि खुलकर स्वीकार करने की अवस्था में नहीं है तो भी चेतना के परिणाम सिद्धान्त पर (Quantum theory of consciousness) अग्रगण्य

ब्रिटिश अक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के भौतिक शास्त्री Sir Rogers Penrose)- सन् १९८५ में एवं अमरीकी वैज्ञानिक ड. स्टूआर्ट हमेरफ (Dr. Stuart Homeroff, Professor Emeritus of the Department of Anestheosiology, ... चेतनाशून्य करने की विद्या एवं psychology मानस शास्त्र ने १९८२ में (Zee news.com १ नवम्बर २०१२)—ट्रूथ ८०।२४— २३ नवम्बर २०१२) एक गंभीर शोधकार्य किया ताकि ब्रह्माण्ड के चालक शक्ति के मूल कारण का पता चल सके। इनका कहना है कि हमारी चेतना (आत्मा) मस्तिष्क कोष के अन्तर्गत माईक्रो टुव्यूल्स् (micro tubules) नामक संरचना में निहित्त है। इनकी गवेषणा के आधार पर इस तथ्य को वे समर्थन करते हैं कि चेतना मस्तिष्क के अंतर्गत क्वांटम कम्प्यूटर के लिये एक प्रोग्राम है जो ब्रह्मांड के मृत्यु के उपरांत भी उपस्थित रह सकता है। भारत, जापान एवं अमरीका के शोधालय में यह तथ्य सामने आया है कि प्राणीकोश के गठन में सहायक माइक्रोटुब्यूल, जो हर कोश में अनेकों लाखों की संख्या में होते हैं, उनके मूल इकाई टुबुलिन की सहायता से बेतार वैद्युतिक चुम्बकीय तरंग के माध्यम, तथ्य संग्रह तथा आदान प्रदान करने में समर्थ हैं। इन शोध कार्य के माध्यम, करीब २० वर्ष पूर्व ब्रिटिश तथा अमरीकी वैज्ञानिकों के आत्मा की चेतनता व चैतन्य का परिणाम सिद्धान्त (Quantum theory of Consciousness) जो मतभेद से परे नहीं था इसको विशेष बल मिला है। भौतिक-शास्त्र-वैज्ञानिक अनिर्वाण बन्दोपाध्याय ने जो जापान के National Institutes of Materials Sciences में पिछले पाँच वर्षों से microtubule पर शोधकार्य कर रहे हैं microtubules माईक्रोटिब्यूल को information processing device अर्थात् प्रधान व भौतिक सूचना प्रक्रिया साधन बताया है।

इसके वर्षों पूर्व भुवनेश्वर में डा. जे. बी. एस हलडेन के ग्रन्थागार में जर्मन वैज्ञानिक (Physiologist शरीर धर्म विज्ञान निपुण) डा. रुपार्ट शेलड्रेक

ने प्राणीओं में स्मृति एवं संस्कार (morphie resonance) शरीर संबंधी प्रतिध्वनि पर अपने विचार एवं जीव के संस्कार पर चिन्तन प्रगट किया। जीव के पुनर्जन्म एवं पूर्व जन्म की स्मृति व संस्कार अगले जन्म में मन के साथ संचरित होती है- इसके आभास इन शोध कार्यों के माध्यम उपलब्ध होते हैं। जड़ विज्ञान की आधुनिक प्रगति भौतिक शास्त्र के जानकारी को ऋषिओं की अनुभूति एवं शास्त्र सिद्धांतों के कगार पर ला रही है।

शास्त्रवाक्य की उपेक्षा करने के लिये जो जड़ विज्ञान के सिद्धांतों की आड़ में अपने नास्तिक मनोभाव वे अज्ञान राशि को छुपाना चाहते हैं एवं जो लोग पाश्चात्य विज्ञान के मोहर के लगे बिना हिन्दु शास्त्रों को मानने में व सम्मान करने में सकुचाते हैं—ये नये शोध कार्य उनके लिये जड़ और चेतन की धारणा के बीच सेतु का कार्य करेगी। भेद और अभेद (भेदाभेद) के बीच मेलबंधन का काम करेगी। वास्तव में जैसा कि गोस्वामी तुलसीदास जी ने कहा है—

जड़ चेतन जग जीव जत, सकल राम मय जानि
बन्दऊँ सबके पदकमल सदा जोरि जुगपानि।

जीव जैसे जैसे जन्म जन्मान्तर, कल्प कल्पान्तर विविध योनियों में घूमता रहता है, उसका संस्कार तथा देहाभिमान वश पूर्वकृत कर्म, एवं मन व चित्त की स्मृति का प्रच्छन्न प्रवाह, उसके साथ चलता रहता है एवं 'यथा योनि यथा बीजं स्वभावेन बलीयसा'— उसी के अनुसार माता पिता के माध्यम सत्व, रज व तमोगुण प्रधान संस्कारयुक्त शरीर प्राप्त करता है। एकमात्र भगवद् भक्ति के प्रभाव से ही जीव का अशेष विशेष संस्कार एवं प्रारब्ध क्षीण हो जाता है एवं जाति दोष से भी मुक्त हो सकता है।

भक्तिरेव परोलाभः ततोन्यत् नास्ति किंचन।

अपने अहंकार व देहाभिमान में बंधा जीव सत्संग एवं सन्त की कृपा से शुद्ध होकर भक्ति एवं शरणागति के मार्ग पर चलकर श्री बैकुंठनाथ

के चरण कमल तक पहुँच सकता है।

इसलिये एक ओर शास्त्र निर्दिष्ट भेद को मानकर सबके साथ सम व्यवहार के ढोंग को त्याग कर यथोपयुक्त व्यवहार, अधिकार के अनुसार करते हुये व्यक्ति, समाज एवं जीवन को सुरक्षित करना है। साथ ही 'ज्ञानं च समदर्शनं' सबमें श्रीहरि के अस्तित्व को दिल में बसाते हुये जीवन को अहंकार मुक्त एवं आनन्दमय बनाना है। क्योंकि- 'अहंकार मुक्तो जनो बंध मुक्तः' जिसका अहंकार व शरीर में, मैं और मेरापन चला गया हो वो भगवद् कृपा से त्रिगुणमयी माया के बंधन से मुक्त हो जाता है।

ईश्वर की सृष्टि में वर्ण अनिवार्य है, क्यों ?

देवास्वम बोर्ड द्वारा दुष्ट प्रयास:

अक्टूबर में द त्रावणकोर देवास्वम बोर्ड ने एक दलित और ३० ओ. बी. सी. को पुजारियों के रूप में नियुक्त किया। जबकि ओ. बी. सी. को पहले भी पुजारियों के स्थान पर नियुक्त किया गया था, यह पहली बार था कि एक दलित को यह स्थान दिया जा रहा था।

द त्रावणकोर देवास्वम बोर्ड ने अक्टूबर में एक दलित और ३० ओ. बी. सी को मन्दिरों में पूजारियों के तौर पर नियुक्त किया था जिसका निर्देश केरल सरकार द्वारा प्रदान किया गया था जो उनके जाति आधारित आरक्षण नीति के अन्तर्गत था। पाँच ओ. बी. सी को पहले ही भर्ती किया जा चुका था, जिससे उनकी संख्या ३६ हो गयी थी। गांधी-नेहरु गिरोह द्वारा उठाये कदम को हिंदू विरोधी गुट ने समर्थन दिया–वर्ण व्यवस्था के विरोध में, और समाजवादी कम्युनिस्ट हिंदू विरोधी कमल हसन और अन्य अलीक हिन्दुओं ने, जिनका एकमात्र पासपोर्ट हिन्दू शास्त्रों में [illegible] अज्ञानता है। यह हमें इस कथन की याद दिलाता है–

वानराणां विवाहे च गर्दभाः मन्त्र पाठकाः।

परस्परं प्रशंसन्ति अहो रूपः अहो स्वरः।।

बंदरों के विवाह में, एक गधा मंत्र जाप करता है, दोनों अपनी सुंदरता और स्वर के लिए एक दूसरे की सराहना करते है।

१. यहाँ तक कि हिन्दू परिवार के एक बच्चे को भी पता है कि वास्तु शास्त्र, वास्तुकला, नींव डालने का सही समय, मूर्ति बनाने के लिए मिट्टी, पत्थर, रत्न या धातु, (मृतशिलामय), मूर्ति के अभिषेक के अनुसार मंदिर निर्माण के लिए भूमि का चयन, अनुमोदित खगोलिय पंचांग स्थिति-समय और स्थान, अर्चना सामग्री, यंत्र, मंत्र, विशिष्ट,

फूल, फल और देवताओं को चढ़ाने के लिए अन्य प्रसाद, अर्चक या पुजारी की विशेषतायें उनका जन्म, योग्यता और आचार, सार में, सभी तत्वों का उपयुक्त मर्यादा से पालन शास्त्रानुसार करना, शास्त्र श्री भगवान के वाङ्मय स्वरूप हैं। इनके अनुवर्तन करने से चेतना का उदय होता है जो आनन्दमय की प्राप्ति के लिए प्रेरित करता है। परन्तु केरल के मुख्यमंत्री या उनकी कम्युनिस्ट पार्टी के पास इस विषय को गंभीरता से समझने की चाह भी नहीं है।

२. प्रणव या ओंकार सृष्टि का सर्वोच्च स्रोत सर्व व्यापक है–

खं वायुमग्निं सलिलं महीं च...

ज्योतिंषि सत्वानि दिषो द्रुमादीन्।

सरित् समुद्रांश्च हरेः शरीरम्।

यत् किञ्च भूतं प्रणमेदनन्यः।।

आकाश, वायु, जल, पृथ्वी, सारे ग्रहगण और तारकायें तीनों गुण– (सत्व, रज और तम), दसों दिशायें, वृक्ष तरु लता नदी सागर विश्व में सब कुछ परमेश्वर श्री हरि के शरीर हैं और प्रणव (ओंकार) से सृष्ट एवं ओतप्रोत हैं। अतः अनन्य भाव से सबको प्रणाम करना चाहिये।

३. आचरण में प्रतिष्ठित केवल द्विजजाति का (ब्राह्मण, क्षत्रिय एवं वैश्य) वेदों में एवं प्रणव में अधिकार है। नाम प्रेमावतार श्रीश्रीठाकुर सीतारामदास ओंकारनाथ देव से पूछे जाने पर कि चण्डाल का उद्धार कैसे होगा– उन्होंने सीधा जवाब दिया कि राम राम के उच्चारण से। परन्तु वेदपाठ या प्रणव के अभ्यास की स्वीकृति नहीं है। राम राम नाम के उच्चारण व जप करने से अप्रत्यक्ष रूप से वे वेदों की ही शरण लेते

हैं (सीताराम लीला आलेख्य द्वारा प्रमोद रंजन गुप्त पृष्ठ १३९)

४. श्रीमद् भागवत ग्रन्थ (१४।२१।१६) में कहते हैं–

प्रणमेत् दण्डवत् भूमावाश्वचाण्डाल गोखरम्– अर्थात् ईश्वर सर्वत्र विराजते हैं और कुत्ता या चण्डाल से लेकर सबको भूमि पर साष्टांग प्रणाम निवेदन करना चाहिये।

५. बौद्ध और जैन धर्म में जाति व्यवस्था: सम्भवतः बौद्ध और जैन दोनों जन्मगत जाति व्यवस्था मानते थे। स्वयं बुद्धदेव, लोगों की धारणा के विपरीत कर्मफल के आधार पर, पूर्व जन्म में भले बुरे कर्म के अनुसार जन्म होता है–ब्राह्मणों की भाँति यह मानते थे (Weber, WBIL--World Basic Information Library, p. 289) बौद्ध सन्त जिनेन्द्र बुद्धि ने कशिका के न्याय पर टीका में लिखा है– जन्मना ब्राह्मणवंशः क्षत्रियवंशः (पाणिनी ११।१।१९)

उसीप्रकार अभिनव संकटायन, एक जैन वैयाकरण ने शब्दानुशासन ग्रन्थ में, पाणिणि के नीति का ही अनुसरण किया है– क्षत्राद् छः ३५ इत्यादि।

अतः प्राचीनकाल से वैदिक समाज में वंशगत जाति व्यवस्था समाज का अच्छेद्य अंग रहा है।मोक्ष प्राप्ति के लिये जीव जन्मजन्मान्तर विभिन्न शरीर प्राप्त करते हुये परममोक्ष की प्राप्ति तक भ्रमण करता रहता है– यह सिद्धान्त इसी नींव पर प्रतिष्ठित है। (द्रुथ ३७।३५।पृ० ५५७– दिनांक १९।१२।६९)

(५) भूमिः वास्तु शास्त्र में सूत्रधर मण्डन ने स्थापत्य शिल्प पर गवेषणापूर्ण ग्रंथ राजबल्लभ के प्रथम अध्याय में लिखा है–

श्वेता ब्राह्मण भूमिका च घृतवद् गन्धा शुभस्वादिनी।

रक्ता शोणित गन्धिनी नृपतिभू स्वादे कषाया च सा।।

स्वादेऽम्ला तिलतेनगन्धरुदिता पीता च वैश्यामही।

कृष्णा मत्स्य गन्धिनी च कटुकी शूद्रेति मूलक्षणं।।

इस श्लोक में यह कहा गया है कि भूमि चार वर्णों में विभाजित है– ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र। जिस भूमि का रंग सफेद, महक घी जैसा, मीठा और स्वादिष्ट हो उसे ब्राह्मण गोत्र का माना गया है, लाल रंग, खून का महक, और कषैला स्वाद भूमि क्षत्रिय, वैश्य गोत्र की भूमि पीले रंग का गन्ध तिल के तेल जैसा और स्वल्प स्वादयुक्त एवं शूद्र भूमि काले रंग कटु (कडुआ) स्वाद और मत्स्य गन्धयुक्त होता है।

मत्स्य पुराण के वास्तु निर्णय के २२७ अध्याय में ऐसे प्रमाण मिलते हैं। बंगाल के प्रख्यात आचार्य रघुनन्दन ने अपने ज्योतिष तत्वम् में वास्तु भूमि के चार वर्णों के अतिरिक्त और मिश्र जाति एवं अन्य जातियों का भी वर्णन किया है।

६. वृक्षाः (काठ)– वृक्षायुर्वेदः

युक्ति कल्पतरु में उल्लेख है–

वृक्षायुर्वेद गपिता वृक्षजातिश्चतुर्विधा।

समासे नैव गदितं तेषां काषुं चतुर्विधम।।

तद् यथा–

लघुयत् कोमलं काष्ठं सुघटं ब्रह्मजाति तत्।

दृढ़ाङ्गं लघुयत् काष्ठमधरं क्षत्रजाति तत्।।

कोमलं गुरुयात् काष्ठं वैश्यजाति तदुच्यते।

दृढ़ाङ्गं गुरुयत् काष्ठं शूद्रजाति तदुच्यते।।

प्राचीन भारत में आयुर्वेद को उपवेद अर्थात् वेद के सहायक की मान्यता थी। मनुष्य शरीर के रोग और अस्वस्थता की चिकित्सा के लिये आयुर्वेद प्रयुक्त था। इसी के साथ हाथी के इलाज के लिये हस्तायुर्वेद, घोड़े की चिकित्सा के लिये आश्वायुर्वेद, पेड़ पौधों के लिये वृक्षायुर्वेद है। कृषि एवं उद्यानपालन के क्षेत्र में वृक्षायुर्वेद का प्रयोजन है।

ऊपरोल्लिखित श्लोक यह दर्शाते हैं कि वृक्षों को चार वर्गों में बाँटा गया है। काठ के चार प्रकार व जाति हैं। हल्का, नरम एवं चिकनाव बराबर काठ ब्राह्मण है, क्षत्रिय काठ हल्का, मजबूत, भद्दा और असमान होते हैं। वैश्य काठ भारी (वजनदार) परन्तु मुलायम होते हैं तथा शूद्र काठ मजबूत और भारी होते हैं।

७. यहाँ भविष्य पुराण, गरुड़ पुराण, मत्स्य पुराण, भाव प्रकाश, राजा वल्लभ, लौहार्णव से तथ्य संग्रहित हुये हैं, और प्रधान तौर पर युक्ति कल्पतरु से। भारतीय संस्कृति एवं इतिहास के अंग्रेज विद्वान, वर्ण विभाग को मनुष्य सृष्ट बताते हैं। गौर करने की बात है कि नास्तिक दार्शनिक चार्वाक, जिसने ब्राह्मणों की दिलखोल कर निन्दा की हैं उसने भी वर्ण व्यवस्था को मानवकृत नहीं बताया है।

देवताओं के भेष में दानवों की भाँति अहंकार और अज्ञान से ग्रसित, बुद्धिहीन हिन्दू ही हिन्दु के सबसे बड़े शत्रु हैं।

अहंकारोऽभिमानश्च विमोहयति मानसम्।

परमार्थो न दृश्येत तन्निराकरणादृते।।

हिन्दु धर्म शास्त्रों के अमर्यादा की तथा सनातन हिन्दुओं के आध्यात्मिक अधिकारों पर हिन्दू विरोधी राजनैतिक शक्ति का अन्याय प्रहार, न केवल हिन्दुओं के पावन कर्म एवं जीवन धारा को वाधित करता है बल्कि भयानक प्राकृतिक विपर्यय एवं प्रलयकारी दुर्गति का सूचक है।

बालू पर एक पदचिह्न ही मनुष्य की उपस्थिति का प्रसारण है, परन्तु एक नास्तिक, ईश्वर के हाथों के चिह्न सर्वत्र विद्यमान रहते हुये भी मानने से इन्कार करता है। शास्त्रों में विश्वास के लिये युक्ति तर्क की अपेक्षा नहीं होती— जो नास्तिक के लिये स्वभाव सिद्ध है, क्योंकि शास्त्र वाक्य की सत्यमयता में सन्देह नास्तिकता का प्राण है। एक हिन्दू कभी नास्तिक नहीं बन सकता और नही कोई नास्तिक कभी हिन्दू।